संपादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

लघु कथा बड़ी व्यथा

अगर चांद पर जाकर कोई व्यक्ति धरती पर आने का रास्ता भूल जाए तो सारी दुनिया उसकी होकर भी वह असहाय रह जाता है । धरती उसके सामने होती है पर वह यहां तक आ नहीं सकता। दूर क्षितिज पर चमकते समस्त तारे हमें दिखाई पड़ते हैं, इनमें कई पृथ्वी से हजारों गुणा बड़े हैं । इस ब्रह्माण्ड, जिसकी कोई सीमा नहीं , उस तक जाने और आने के रास्ते और साधन बनाने में अनेक वैज्ञानिकों की उम्र बीत गई है और बीत रही है मगर एक रचनाकार पलभर में आसमान के पार होकर आ जाता है। इस दिखने वाले लोक से परे भी एक दुनिया है, जहां के चांद - सितारे क्या पता सात रंगों से भी अलग रंग के हों ? सात रंग सूर्य की किरणों में हमें नज़र आते हैं, जिससे इन्द्रधनुष बनता है । पेड़, पौधे, फूल पत्तियां बनती हैं। जितने रंग यहां मौजूद हैं, सब प्रकृति की देन हैं। जो रंग हमने कृत्रिम रूप से बनाए हैं, वो भी प्रकृति की ही उपज हैं ।

बचपन में जितनी भी कहानियां हमने पढ़ी या सुनी हैं, इनमें ये सारे रंग मौजूद हैं । ये कहानियां हमें इसलिए याद नहीं हैं कि हमारा मस्तिष्क पूरी तरह रिक्त था और हमारी स्मरण शक्ति भी तरोताजा थी बल्कि वो इसलिए याद हैं कि वे होनी से बिल्कुल अलग थी और ज्ञान का मजबूत संदेश दिया करती थीं । अट्ठारह साल का समझदार युवा आज भी यह मान लेता है कि किसी के कहने पर शेर अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझकर कुएं में छलांग लगा सकता है या कौवा घड़े में कंकड़ डालकर पानी को ऊपर ला सकता है । परन्तु अट्ठारह के बाद के पाठक के लिए विषय - वस्तु हमेशा से बदलता रहा है। कहानी, कथानक से इतर

शिल्प और भाव की ओर मुड़ती रही है। सामाजिक सच्चाई से जुड़ी कहानियां भी पाठकों को प्रभावित करती रही हैं। प्रेमचंद इसका बड़ा उदाहरण हैं । कहानी जब कमलेश्वर तक आती है तो पूरी तरह बदल जाती है। सारे संदर्भ आधुनिक हो जाते हैं । इस तरह के प्रसंग नहीं जुड़ते कि प्रसव पीड़ा से कराह रही एक औरत के पास बाप (पिता) चला जाएगा तो बेटा सारे आलू खा जाएगा और बेटा चला जाएगा तो पिता । आजादी के बाद इस तरह के दृश्य कहानियों में कम देखने को मिले हैं। साठ का दशक आते-आते तो कहानियों के बादल न जाने कहां से आकर हिन्दी के आसमां पर छा गए। तड़ातड़ शब्द, शिल्प और भावनाएं बरसी और कहानियों की बाढ़ सी आ गई। कथानक की दृष्टि से ये सब लघु कथा ही हैं। अगर साठ के बाद की लगभग सभी कहानियों को लघु कथा ही मान लिया तो किसी कथाकार को आपत्ति नहीं होनी चाहिए । बड़ी बात यह भी है कि इन कथाकारों को विषय - वस्तु के लिए आसमां के पार नहीं जाना पड़ा, इन्हें आसपास की फिजा से ही सबकुछ मिल गया। "साहित्य, समाज का दर्पण है" की पुष्ट भी इसी काल में हुई । शिल्प सौंदर्य की सहजता और बिम्बों का नया रूप भी इसी समय दिखाई पड़ा । मार्क्सवाद को भी पंख यहीं से लगे । यह कहानियों का स्वर्णिम काल भी कहा जा सकता है। इस दौर के कथाकार अगर आसमान के पार से आलौकिक तारे भी तोड़ लेते तो शायद कथाओं का क्षितिज कुछ और होता । इन कहानियों का कथानक बहुत छोटा रहा पर उसमें बड़ी व्यथाएं छिपी हुई मिली । विज्ञान ने सारे तथ्य हमारे सामने रख दिए थे । इनके सहारे इसमें मनचाहे ख्याल आसानी से जुड़ सकते थे । कामायनी इन्हीं ख्यालों की बिसात पर महाकाव्य का रूप ले गई । डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल की छोटी सी कृति कलंकी भी वृहत बन गई ।

रामायण और महाभारत की कहानी में तो यह मान लिया गया कि यह दिव्य शक्ति का परिणाम है और है भी , नहीं तो रामायण में

निहित चरित्रों के ग्रह-नक्षत्र कहां से आते ? कैसे महाभारत में संजय धृतराष्ट्र को विश्व का नक्शा समझाते ? आज के कथाकारों के पास पूरा खगोल और भूगोल होते हुए भी महिला कथाकार अपनी कामवाली बाई घरेलू परिवेश तथा रिश्ते-नातों से बाहर नहीं आ पाई और पुरुष कथाकार आर्थिक परेशानी, जात-पात और प्रेम संबंधों से । साठ के बाद की व्यथाओं से कथा, शिल्प और भाव पक्ष को मजबूती अवश्य मिली है मगर कल्पना लोक कहीं पीछे छूट गया । बाल कहानियां तक अपनी परम्परा का अपना निर्वहन करती रहीं मगर कोई भी कथाकार आकाश पार जाकर किसी ग्रह-नक्षत्र की कोई बात निकालकर नहीं ला सका । विदेशी कथाओं और भाषाओं में ये खूब देखने को मिला है । उनके चलचित्र और नाटक इसीलिए अपनी पहचान बना सके । साठ के बाद की कथाएं मन के भीतरी धरातल तक पहुंचने में कामयाब रहीं और यही परम्परा अभी तक जारी है। इससे बाहर निकलना अब आवश्यक हो चला है अन्यथा कहानी के पाठक निश्चित रूप से दूर होते चले जाएंगे। कवि आज भी हर दिन दस सामने आ रहे हैं मगर कहानीकार के लिए सम्पादकों को नाम खोजने पड़ रहे हैं। समय को हरदम नये की तलाश होती है। कविता में नयेपन के लिए एक बड़े कालखंड का मोहताज होना पड़ता है मगर कहानियों की जमीन को हर पल बदला जा सकता है।

अन्त में, 'साहित्य रत्न' के लघुकथा विशेषांक के अतिथि सम्पादक बड़े भाई आदरणीय बलराम अग्रवाल जी को 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष 2023 हेतु डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान' दिये जाने पर शतश बधाइयाँ। सभी देशवासियों व सुधी साहित्यकारों को अनन्त मंगल कामनाओं के साथ।